Deg-2
Hist (Hons)

बलबन का मूल्यांकन

बलबन द्वारा स्थापित राजवंश उसकी मृत्यु के बाद मात्र तीन वर्षों तक ही कायम रह सका। उसके पुत्र बुगरा खान ने दिल्ली का राज सिंहासन अपने पुत्र के जिम्मे छोड़ते हुए लखनौती में ही शासन करना पसन्द किया। दिल्ली में उसके जिस पुत्र ने राजसिंहासन संभाला उसका नाम कैकुबाद था जो मात्र 18 वर्ष का नवयुवक था। कैकुबाद अत्यन्त विषयासक्त और विलासी साबित हुआ। उसने समस्त राजकाज निजामुद्दीन के हाथों सौंप दिया जिसने अपने सभी विरोधी तुर्क अधिकारियों को मार डालने की कोशिश की। इस प्रक्रिया में स्वयं निजामुद्दीन की हत्या हो गई। प्रशासन ध्वस्त हो गया और जलालुद्दीन खिलजी को जो सीमांत प्रदेशों का प्रहरी था एवं जिसने मंगोलों के विरुद्ध लड़कर ख्याति और विशिष्टता अर्जित की थी, उसने शीघ्र ही कैकुबाद से निजात पा ली और 1290 ई० में एक नए राजवंश की स्थापना की।

यद्यपि बलबन किसी राजवंश की स्थापना नहीं कर पाया, किन्तु उत्तरी पंजाब अथवा सिन्धु-गंगा मैदान में, जो उसके राज्य का वास्तविक भाग था, कानून और व्यवस्था कठोरतापूर्वक लागू करने और अराजक तत्वों का सख्ती से दमन करने के अलावा व्यापारिक माल और व्यापारियों के संचालन हेतु सड़कों को निरापद बनाकर उसने सल्तनत के विकास और भावी विस्तार की आधार शिला रखी।

P.T.O.

P.T.